ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI:UPBIL04292, REG. No.: 561/2013-2014 Vol.-1, No.-1, PP-300-301, YEAR-2014

पंडित दीनदयाल जी के धर्म एवं संस्कृति संबंधी विचार

❑ डॉ0 राजनारायन शुक्ल

सार– भारतीय ऋषि परम्परा के प्रतिनिधि – *विश्व गुरू कही जाने वाली पावन भारत भूमि की ऋषि के प्रतिनिधि स्वरूप पंडित दीनदयान उपाध्याय जी का अवतरण कर्मयोगी श्री कृष्ण की लीलास्थली मथुरा के फरह के समीपस्थ गांव नगला चन्द्रभान में हुआ था। भक्त कवियों की भांति आत्मष्लाघिता रहित, आत्म विलोपी, तुलसी सम लोक शिक्षक, लोक नायक, निरहंकारी, निस्पृही विनम्र, मृदुभाशी, साधुस्वभाव, दृढ़ प्रतिज्ञ, राष्ट्रप्रेमी, सादा जीवन उच्च विचार जिनका आभूषण था, छुद्र भावनाओं से अछूते, अनाशक्त योगी, ऐसे राष्ट्रमंदिर के पुजारी पंडित जी ने अपना परिचय स्वंय कभी नहीं दिया। दूसरों को आगे करके राष्ट्र साधना में रत उनका जीवन चरित्र ही उनकी आत्मकथा है। आज जो कुछ भी हमें ज्ञात है वे उनके साथी संघ कार्यकर्ताओं के संस्मरण है। संस्मरण से प्राप्त परिचय कराना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। उनका आदर्श हमारी धरोहर है, जिसका अनुकरण करके युगों तक राष्ट्रधर्म की यह अविरल धारा निरन्तर बहती रहेगी। राश्ट्रधर्म के प्रबल पुजारी पंडित जी भारतीय धर्म एवं संस्कृति के प्रबल समर्थक थे।*

पंडित जी की विचारधारा में धर्म व आस्था– पंडित जी हिन्दू सनातन धर्म के अनुयायी थे, जिसका मूल राष्ट्रधर्म ही था। उनके धर्म में नीति मर्यादा, मानवीय अधिकार, मूल्य, सांस्कृतिक राष्ट्र मण्डल की अवधारणा, राजधर्म शासन, शिक्षा स्वास्थ्य, सामाजिक समरसता आदि मानवीय आवश्यक तत्व विद्यमान थे। वे कोरे आस्तिक न होकर व्यावहारिक तत्व वेत्ता थे। उपाध्याय जी कहते थे "धर्म का संबंध मन्दिर–मस्जिद से नहीं है। उपासना व्यक्ति के धर्म का एक अंग हो सकती है, परन्तु धर्म तो व्यापक है। मन्दिर–मस्जिद लोगों में धर्माचरण की शिक्षा के प्रभावी माध्यम रहे हैं, किन्तु जिस तरह विद्यालय विद्या नहीं है, उसी तरह धर्म मन्दिर से भिन्न है।"

गांधी जी की भांति उनका धर्म तीर्थ स्थल, पूजा–पाठ तक सीमित नहीं था। उनके विचार में धर्म का उद्देश्य सम्पूर्ण समाज का आध्यात्मिक एवं भौतिक उन्नयन करना है। वे व्यक्ति धर्म के साथ राश्ट्रधर्म के कट्टर समर्थक थे। उनका मानना था कि व्यक्ति राष्ट्रधर्म का पालन करता है तो व्यक्तिगत धर्म का पालन स्वतः हो जाता है। इसका अर्थ ये नहीं कि वे मन्दिर या मूर्ति पूजा में आस्था नहीं रखते थे। वे पक्के आस्तिक थे। पंडित जी त्रिदेव, वायु, अग्नि, वरूण, तुलसी, गाय सभी देवताओं की सत्ता में समान आस्था रखते थे। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में ईश्वर की सत्ता स्वीकारते थे, परन्तु ढोंग–ढकोसलों का विरोध भी करते थे। एक बार जगन्नाथजी के दर्शन करने गये परन्तु वहां के पण्डे–पुजारियों ने पूजा के नाम पर चढ़ावा, भेंट आदि कर्मकाण्डी अनर्गल बातें प्रारम्भ कर दीं और पंडित जी बिना दर्शन किये ही लौट आये।

उन्होंने कहा था –"आज मैं पक्का सनातनी बनकर दर्शन करने गया था, परन्तु कोरा आर्यसमाजी बनकर लौटा हूँ, मुझे बड़ा दुःख है, क्योंकि मेरा जन्म यहां से बहुत दूर हुआ है। अब जगन्नाथ जी का प्रतिदिन दर्शन करने के लिए मुझे यहां पुनर्जन्म लेना होगा।" जितने वे हिन्दू धर्मा, राष्ट्रधर्म के प्रति कट्टर थे, उतने ही वे दूसरे धर्मो के प्रति सहिष्णु थे। भारत में सहिष्णुता का ढोल पीटने वाले कुचकी यदि भारतीय

एसो. प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, चम्पुदयाल कालेज, गाजियाबाद (उ0प्र0), भारत

संस्कृति, धर्म और महापुरूषों को जानने का थोड़ा सा भी प्रयास करें तो उनके हृदय में विषांकुर प्रस्फुटित ही न होगा।

पंडित जी के अनुसार यज्ञ– वे यज्ञ की व्याख्या करते हुये कहते थे– "व्यक्ति समाज पर निर्भर है और समाज व्यक्ति पर तथा सृष्टि नियती पर, जब तक यह परस्पर सहयोग करता है, तब तक सृष्टि चलती रहती है। यही यज्ञ चक्र है। गीता का उदाहरण देकर वे समझाते थे–"प्राणी अन्न से, अन्न वर्षा से, वर्षा यज्ञ से तथा यज्ञ ब्रह्म से उत्पन्न है। अतः यह एक चक्र है। यह अखण्ड चक्र ही सभी सुखों की धारणा है। यही धारणा धर्म है क्योंकि "धार्यते इति धर्म।" अतः परस्पर कर्तव्यों का पालन ही धर्म है।

धर्म के पालन हेतु वे राष्ट्र में परिवार भावना तथा परिवार में राष्ट्र भावना के परस्पर मेल पर बल देते थे। वे कहते थे– प्रत्येक घटक में राष्ट्रप्रेम की भावना का विकास ही धर्मनिष्ठता है, परस्पर अनुकूलता ही स्वतंत्रता का आधार है, यही चिती है, धर्म है, धर्म ही भारत की आत्मा है।

पंडित जी के अनुसार संस्कृति– वैसे तो पंडित जी का जीवन चरित्र ही भारतीय संस्कृति की गाथा है। विश्वबंधुत्व, वसुधैव कुटुम्बकम, परोपकार, परदुःखकातरता, धीर, वीर, नीर, क्षीर, विवेकी, स्वावलंबी, स्वाभिमानी, वैदिक संस्कृति को जीवन में जीने वाले उपाध्याय जी ने शिविर में प्रश्नकर्ता को बड़े ही सरल शब्दों में समझाया था–"हर मनुष्य को कभी न कभी जमुहाई आती है" वह स्वाभाविक ढंग से आ जाये तो प्रकृति, किन्तु जान मुझकर मुंह टेड़ा–मेड़ा करना, ऊँची आवाज करना विकृति है। कतई कोई आवाज किये बिना मुंह पर रूमाल जमुहाई लेना संस्कृति है। इतने उच्च विचार को इतने स्वाभाविक सादगी भरे शब्दों में परिभाषित करना उपाध्याय जी की ही कुशलता है। सर्वधर्म एकता एवं विश्व में उन्नति का पाठ पढ़ाते हुये वे हमेशा कहते थे– "उत्तराधिकारी के रूप से प्राप्त राष्ट्र की अस्मिता, अखण्डता और विश्व भर में श्रेष्ठ भारतीय जीवन दर्शन के संरक्षण के लिये हम कोई भी बलिदान देने के लिये कटिबद्ध हैं, परन्तु सिद्धान्तों के साथ समझौता करने के लिये तैयार नहीं।"

भारतीय संस्कृति का ध्येय मानव उत्थान, विश्व कल्याण– "प्राचीन काल से ही भारत के प्रत्येक क्रियाकलाप में धर्म समाहित है। गाय और तुलसी को यहां पूजते हैं चाहे हम इसकी वैज्ञानिक औषधीय गुण जानते हों या न जानते हों, यदि हमारे हिन्दू राष्ट्र की अटूट जीवन शक्ति है। इस जीवन शक्ति की जड़े कितनी गहरा हैं, कल्पनातीत है। हिन्दू राष्ट्र का विचार कोई संकीर्ण– विचारधारा नहीं, इस शब्द में समूची मानवता समायी है, जो चराचर सृष्टि से अनंत कोटि ब्रह्माण्ड के साथ एकरूप होने की प्रेरणा देता है।"

भारतीय हिन्दू राष्ट्रवादी संस्कृति सौ दो सौ साल पुरानी नहीं बल्कि प्राचीन काल से चली आ रही है। इसका आधार स्वार्थ नहीं, आपसी संघर्श नहीं, बल्कि परमार्थ एवं परस्पर सहयोग है। पाश्चात्यों की भांति भारत में राष्ट्रीय एकता एक विशाल प्राईवेट लिमिटेड कंपनी नहीं हैं जिसमें अंशदाता अपने निजी स्वार्थ के कारण जुड़ते हैं। स्वार्थ के लिये तो डकैत भी परस्पर ईमानदारी का व्यवहार करते हैं। यहां तो निःस्वार्थ भाव से सहयोग किया जाता रहा है। हमारी संस्कृति का सार ही "सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः" है। विश्व कल्याण है। सब का उत्थान है। भारत की ऐसी परम पवित्र संस्कृति को जीने वाले साक्षात् दधीचि सम पंडित जी को हमारा शत–शत बार नमन।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. राष्ट्रधर्म – अगस्त, 2012 अंक, पृ. 24.
2. पाञ्चजन्य – फरवरी, 2016 अंक, पृ. 04.
3. भारतीय संस्कृति : भोलाशंकर व्यास, पृ. 105.
4. संस्कृति के चार अध्याय : रामधारी सिंह 'दिनकर', पृ. 14.
5. संस्कृत साहित्य का इतिहास : आचार्य बल्देव उपाध्याय, पृ. 172.

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI:UPBIL04292, REG. No.: 561/2013-2014 Vol.-1, No.-1, PP-302-306, YEAR-2014

भारत में कृषि उत्पादन के सन्दर्भ में डॉ. अम्बेडकर जी के विचारों का अध्ययन

❑ डॉ0 आशा साहू

सार– *भारत की सर्वाधिक जनसंख्या कृषि पर ही जीवनयापन करती है। यह सबसे पुराना व्यवसायएवं वर्तमान में सबसे बड़ा उद्योग हैं। देश की अर्थव्यवस्था में कुल रोजगार में कृषि क्षेत्र का लगभग 59 प्रतिशत योगदान बना हुआ है। परन्तु देश की प्रमुख समस्या जोतो के छोटे आकार की है, जो कृषि उत्पादकता को सर्वाधिक प्रभावित करती है। डॉ. अम्बेडकर का मानना था कि, भारत में समान उपविभाजन नियम के कारण कृषि जोतें निरंतर छोटी होती जा रही हैं। इन जोतों के घटते आकार को उन्होंने भारतीय कृषि के लिए अत्यधिक हानिकारक बताया है। इस समस्या का समाधान के लिए अनेक उपाय बताए जैसे चकबंदी, औद्योगीकरण,पूँजी और पूँजीगत वस्तुओं को बढ़ाना। पर कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता बढ़ाने के लिए सबसे अच्छा उपचार औद्योगीकरण है।*

डॉ0 अम्बेडकर जी ने सन् 1918 में अपने लेख स्माल होल्डिंग्स इन इण्डिया एण्ड देयर रेमेडीज में कृषि भूमि सुधार के सम्बध मे अपना विचारदिया। भीमराव अम्बेडकर जी को 1990 को भारत के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार भारत रत्न से सम्मानित(मरणोपरांत) किया गया। आर्थिक विचारों के इतिहास में सर्वप्रथम 18वीं शताब्दी में फ्रांस के प्रकृतिवादियों ने .षि को महत्व प्रदान किया। उन्होंने कृषि को उत्पादन का सर्वश्रेष्ठ एवं विशुद्ध साधन माना। इस अवधारणा को अर्थशास्त्र के जनक एड्म स्मिथ ने अपनी पुस्तक An Enquiry into the nature and causes of Wealth of Nations (1776)में भी स्वीकार किया था। प्रो. माल्थस ने अपने जनसंख्या के सिद्धांत में कृषि को विशेष महत्व देते हुए स्पष्ट किया, कि कृषि उत्पादन अंकगणतीय क्रम जबकि जनसंख्या पर ज्यामितीय क्रम में वृद्धि होती है।

तालिका क्र.–1 भारत की जनसंख्या

जनसंख्या वर्ष	जनसंख्या (करोड़ में)
1951	36.11
1961	43.92
1971	54.82
1981	68.33
1991	84.64
2001	102.87
2011	121.01

Source- Government of India,Census of India-2011.

तालिका क्र.–1 से स्पष्ट है कि वर्ष 1951 से 2011 तक भारत की जनसंख्या में दशकीय वृद्धि में धनात्मक वृद्धि हुई है।

शोध का उद्देश्य

प्रस्तुत शोधपत्र के उद्देश्य निम्नलिखित है –

प्रस्तुत शोधपत्र में कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता बढ़ाने के समाधान के लिए डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचारों का विश्लेषणात्मक विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

भारत में कृशि जोतों की स्थिति का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि–प्रस्तुत शोधपत्र में भारत में कृशि आर्थिक जोतों की स्थिति, इसकी समस्याओं एवं समाधान पर प्रकाष डाला गया है। प्रस्तुत शोधपत्र में द्वितीयक समंको का प्रयोग किया गया है जो उपलब्ध सम्बद्ध प्रकाशित आलेखों, पुस्तकों से संकलित किए गये है, जिसके कारण निष्कर्ष की पूर्ण विश्वसनीयता द्वितीयक समंको पर आधारित है। प्रस्तुत शोधपत्र में वर्णनात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है।

एसोसिएट प्रोफेसर– अर्थशास्त्र विभाग, नेहरू पी. जी. कॉलेज, ललितपुर (उ0प्र0), भारत

भारत देश में जहां कृषि पर निर्भरता अत्यधिक होनें के कारण इसका महत्व और अधिक बढ़ जाता है। कृषि का संबंध खाद्यानों के उत्पादन से होने के कारण इसका स्थान सबसे ऊपर है। किन्तु इसके समक्ष कई समस्यायें हैं। जैसे–क्या उत्पादन किया जाए? उत्पत्ति के साधनों का अनुपात क्या हो? जोत का आकार क्या हो? भूधारण की पद्धति क्या हो? आदि। इन सबसे प्रमुख समस्या जोतो के आकार की है, जो कृषि उत्पादकता को सबसे अधिक प्रभावित करती है।

डॉ. अम्बेडकर ने माना था कि भारत में उपखण्डन के कारण जोतें निरंतर छोटी होती जा रही हैं। उन्होंने इन जोतों के घटते आकार को भारतीय कृषि के लिए अत्यधिक हानिकारक बताया है। उनका मानना था कि उपखण्डन भूमि को टुकड़ों में बांटता है जिससे–

श्रम शक्ति का अपव्यय होता है।

कृषि भूमि मेड़ और सीमांकन में बर्बादी होती है।

फसलों की निगरानी, कुएं खोदना और श्रम की बचत करने वाले उपकरणों का उपयोग अव्यवहारिक हो जाता है।

सड़के, नहरें बनाना कठिन हो जाता है तथा इससे उत्पादन लागत बढ़ जाती है।

तालिका क्र.–2 भारत में कृषि जोत

क्र.	कृषि जोत के प्रकार	जोतो का आकार(हेक्टेयर्स)	भाग में (प्रतिशत)	आर्थिक/ अनार्थिक जोत
1	सीमान्त जोत	0-1.0	64.8	अनार्थिक
2	छोटे	1.0-2.0	18.5	आर्थिक
3	अर्ध-मध्यम	2.0-4.0	10.9	आर्थिक
4	मध्यम	4.0-10.0	4.5	आर्थिक
5	बड़े	10.0 या अधिक	0.8	आर्थिक

Source- Govt. Of India, Ministry of Agriculture, Agricultural Statistics at Glance,2011.

तालिकाक्र.–2 से स्पष्ट है कि भारत में आर्थिक जोतो की तुलना में अनार्थिक जोतो का प्रतिशत अधिक है।

तालिका क्र.–3 भारत में कृषि जोतो की कुल संख्या(1000 में)

क्र.	कृषि जोत के प्रकार	1990–91	1995–96	2000–01	2005–06	2010–11
1	सीमान्त जोत	63389	71179	75408	83694	92826
2	छोटे	20092	21643	22695	23930	24779
3	अर्ध–मध्यम	13923	14261	14021	14127	13896
4	मध्यम	7980	7092	6577	6375	5875
5	बड़े	1654	1404	1230	1096	973
	योग	109037	115580	119931	129222	138349

Source- Agriculture Census 2010-11

तालिका क्र.–4 भारत में कृषि जोतो का कुल आकार (1000 हेक्टेयर में)

क्र.	कृषि जोत के प्रकार	1990–91	1995–96	2000–01	2005–06	2010–11
1	सीमान्त जोत	24894	28121	29814	32026	35908
2	छोटे	28827	30722	32139	33101	35244
3	अर्ध–मध्यम	38375	38953	38193	37898	37705
4	मध्यम	44752	41388	36217	36583	33828
5	बड़े	28659	24160	21072	18715	16907
	योग	165507	163365	159436	158323	159592

Source- Agriculture Census 2010-11

आंकड़ों के आधार पर स्पष्ट है कि भारत भले ही एक कृषि प्रधान देश हो लेकिन इसकी कृषि उत्पादकता कम है। कृषि उत्पादकता में वृद्धि जोतों की चकबंदी और आकार में वृद्धि करके की जा सकती है। परन्तु डॉ. अम्बेडकर के अनुसार जोतों की चकबंदी में दो समस्याएँ है–

1. छोटी और बिखरी हुई जोतो को एक कैसे किया जाऐ?

2. एक बार जोतो की चकबंदी कर दी जाए तो उसी आकार में उन्हें कैसे बनाए रखा जाए?

उनके अनुसार चकबंदी के दौ रूप ऐच्छिक विनिमय,धारण अधिकारहै ऐच्छिक विनिमय से बहुत अच्छे परिणाम प्राप्त करने की आशा नहीं की जा सकती। केवल धारण अधिकार को प्रतिबंधित करने से ही कुछ अच्छे परिणाम प्राप्त किये जा सकते है।

ऐच्छिक विनिमय में प्रत्येक जोत का मूल्य ज्ञात कर लिया जाता है तथा खेतों की मूल सीमाएं समाप्त कर दी जाती है। सड़कों, सार्वजनिक उद्देश्यों के लिए भी भूमि अलग निर्धारित कर दी जाती है।

फिर शेष भूमि को नए तरीके से बांटा जाता है। जिसमें प्रत्येक भाग ऐसे आकार का होता है जो खेती, मिट्टी आदि की स्थानीय दशाओं के अनुसार एक आर्थिक इकाई बन सके। जबकि धारण अधिकार में खातेदारों और उनकी जोतो की सूची बनाई जाती है और गांवो के वरिष्ठ लोगों द्वारा इन जोतो का बाजार कीमत पर मूल्यांकन किया जाता है। फिर भूमि का पुनर्वितरण किया जाता है और कृषकों को उनकी मूल जोत के अनुपात में नई भूमि दी जाती है, जिसका मूल्य वही होता है। यदि अंतर हो, तो उसका नकद भुगतान कर समायोजन किया जाता है।

अतः जोतों का आकार आर्थिक जोत के बराबर होना चाहिए। डॉ. अम्बेडकर ने आर्थिक जोत की व्याख्या की और बताया कि, आर्थिक जोत एक ऐसी जोत होती है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को पर्याप्त उत्पादन के अवसर उपलब्ध हों ताकि वह आवश्यक व्ययों के बाद अपने परिवार का उचित पालन पोषण कर सके।

दूसरी ओर अम्बेडकर का मानना था कि, उत्पत्ति के साधनों के संयोगों का नियमन, अनुपात के नियम के अनुसार होता है। किसी फर्म में उत्पत्ति के साधनों का गलत अनुपात लाभदायक की जगह हानिकारकहो सकता है। अतः साधनों की परस्पर–निर्भरता को ध्यान में रखते यदि कोई व्यक्ति एक साधन को परिवर्तित करता है तो उसी अनुपात में अन्य साधनों की मात्रा को भी परिवर्तित करे। ताकि इस प्रकार के संयोगों से विभिन्न साधनों के बीच एक आदर्श अनुपात विद्यमान हो जाय। उत्पादन फलन से संबंधित इन विचारों को आर्थिक जोत पर लागू करते हुए अम्बेडकर का यह भी कहना था कि, ''यदि हम कृषि को आर्थिक उपक्रम मानते है तो फिर यह भी निश्चित है कि बड़ी या छोटी जोत जैसी कोई बात नहीं है। आर्थिक उपक्रम के रूप में उत्पत्ति के अन्य साधनों की मात्रा ही यह निर्धारित कर सकती है कि उसकी जोत बहुत बड़ी है या बहुत छोटी '' वास्तव में भूमि की एक इकाई के साथ उत्पत्ति के अन्य साधनों का सही या गलत अनुपात भूमि की जोतो को आर्थिक या अनार्थिक बना सकता है। इस प्रकार एक छोटा खेत उसी प्रकार आर्थिक हो सकता है जैसे एक बड़ा खेत। आर्थिक या अनार्थिक होना भूमि के आकार पर नहीं वरन् भूमि के साथ–साथ अन्य साधनों के बीच निर्धारित अनुपात पर निर्भर करता है। यह अनुकूलतम अनुपात प्रति इकाई अधिकतम उत्पादन करते हैं।

भारत में कृषि समस्याओं का समाधान केवल जोतों का आकार बढ़ा कर नहीं किया जा सकता। इसके लिए पूँजी और पूँजीगत वस्तुओं को बढ़ाना आवश्यक है। परन्तु पूँजी का निर्माण बचत पर निर्भर करता है और बचत केवल वहीं हो सकती है जहाँ आधिक्य हो। भारतीय कृषि में कोई आधिक्य नहीं है। इस घाटे को आधिक्य में परिवर्तित करने की आवश्यकता है।

अतः वर्तमान सामाजिक– आर्थिक– परिस्थितियों में चकबंदी और जोतों के आकार में वृद्धि का सबसे अच्छा उपचारभारत का औद्योगीकरण है। उन्होंने औद्योगीकरण के महत्व और लाभों की व्याख्या करते हुए लिखा था, कि इसके प्रभाव संचयी प्रकृति के होते हैं जैसे–

भूमि पर दबाव कम होता है।

पूँजी की मात्रा में वृद्धि होती है।

पूँजीगत वस्तुएँ अनिवार्य रूप से जोतों के आकार में वृद्धि को जन्म देती है।

उपविभाजन के अवसर कम हो जाते हैं।

औद्योगीकरण का प्रतिवर्ती प्रभाव होता है जिससे रोजगार तेजी से बढ़ता है।

भीमराव अम्बेडकर के अनुसार औद्योगीकरण के कारण चकबंदी नहीं होगी परन्तु इससे चकबंदी सुविधाजनक हो जायेगी। डॉ. अम्बेडकर ने अगस्त 1936 में स्थापित 'इंडिपेन्डेन्ट लेबर पार्टी' के कार्यक्रमों 11 fesa कहा कि 'खेतिहरों की गरीबी का कारण जोतों का विभाजन और उन पर जनसंख्या का दबाव

है' इसके समाधान हेतु पुराने उद्योगों का पुनर्स्थापन और नये उद्योगों की स्थापना आवश्यक है।अतः इसका उपचार निःसंदेह औद्योगीकरण है।

निष्कर्ष– प्रस्तुत षोधपत्र के समग्र तथ्यों के विष्लेशण के पष्चात् निश्कर्श को निम्न बिंदुओं मे अभिव्यक्त किया जा सकता है–

डॉ. अम्बेडकर के अनुसार भारत में उपखण्डन एवं अपखण्डन के कारण जोतें निरंतर छोटी होती जा रही हैं। उपविभाजन से भूमि को टुकड़ों में बांटने से श्रम शक्ति का अपव्यय होता है।

भारत में 1990–91 से 2010–11 तक कृशि जोतों की संख्या में वृद्धि हुई है। 1990–91 में कृशि जोतों की संख्या 106637 हजार थी जो कि 2010–11 में बढ़कर 138348 हजार हो गई।

भारत में 1990–91 से 2010–11 तक कृशि जोत के आकार में कमी आई है। 1990–91 में कृशि जोत का आकार 165507 हजार हेक्टेयर थी जो कि 2010–11 में घटकर 159592 हजार हेक्टेयर हो गई।

उत्पत्ति के साधनों का सही या गलत अनुपात भूमि की जोतो को आर्थिक या अनार्थिक बनाता है। इस प्रकार एक छोटा खेत उसी प्रकार आर्थिक हो सकता है जैसे एक बड़ा खेत।

भारत भले ही एक कृषि प्रधान देश हो लेकिन इसकी कृषि उत्पादकता कम है। जिसको जोतों की चकबंदी और आकार में वृद्धि द्वारा बढ़ाया जा सकता है।

भारत में आर्थिक जोतो की तुलना में अनार्थिक जोतो का प्रतिशत अधिक है। यदि कृषि छोटे और बिखरे हुए खेतों से पीड़ित है तो उसका उपचार निःसंदेह औद्योगीकरण है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. बाबा साहेब, डॉ. अम्बेडकर संपूर्ण वाड्मय, खण्ड–2, डॉ. अम्बेडकर प्रतिष्ठान, कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 1998.
2. नागर, विष्णुदत्त एवं कृष्ण वल्लभ, डॉ. अम्बेडकर के आर्थिक विचार और नीतियां, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, 1995.
3. डावेन पोर्ट, एच.जे., द इकोनोमिक्स ऑफ इंटर प्राइज, न्यूयार्क, मेकमिलन, 1913.
4. खिमेशरा, ज्ञानचन्द, डॉ. अम्बेडकर का आर्थिक चिन्तन, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 1995.
5. गोयल, अनुपम, भारतीय आर्थिक समस्यायें एवं नीतियाँ, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कंपनी, खजूरी बाजार, इन्दौर, 1989.
6. अग्रवाल, अनुपम, अर्थशास्त्र प्रतियोगिता साहित्य, साहित्य भवन प्रकाशन, हॉस्पिटल रोड, आगरा, 2006.
7. स्मिथ,एडम, वेल्थ ऑफ नेशन्स, बुक 3, अध्याय 11.
8. डॉ. रामरतन शर्मा, विकास का अर्थशास्त्र एवं नियोजन, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 2005.
9. अनुपम अग्रवाल, अर्थशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा, 2006.
10. भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, 2011.
11. एस.के. मिश्र, वी.के. पुरी, भारतीय अर्थव्यवस्था, हिमालया पब्लिशिंग हाउस, मुम्बई,1998.